राज्य की उत्पत्ति का दैवीक सिद्धान्त :-

रूपरेखा

- प्रस्तावना (राज्य की उत्पत्ति)
- राज्य की उत्पत्ति का दैवीय सिद्धान्त की व्याख्या
- दैवीय सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ
- दैवीय सिद्धान्त की आलोचना
- निष्कर्ष
- संदर्भ ग्रन्थ

प्रस्तावना :- (राज्य की उत्पत्ति)

" राज्य न तो ईश्वर की रचना है और न वह पाशविक शक्ति का परिणाम है न किसी प्रस्ताव अथवा समझौते की सृष्टि है और न परिवार का ही विस्तार मात्र है। राज्य न कोई आविष्कार की हुई वस्तु है और न कोई कृत्रिम मशीन है। राज्य तो इतिहास के स्वाभाविक विकास की संस्था है।" — प्रो. गार्नर

राज्य की उत्पत्ति कैसे हुई, क्यों हुई, राज्य अपने वर्तमान स्वरूप तक किस प्रकार पहुँचा है, ये तथा ऐसे ही कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिन पर राजनीतिक विचारकों ने विचार किया है और अलग-अलग मत प्रकट किये हैं।

जैसे कि :- गिलक्राइस्ट कहते हैं, "जहाँ इतिहास असफल हो जाता है, वहाँ हम कल्पना का सहारा लेने लगते हैं।"

(The Divine Origin Theory)

दैवीय सिद्धान्त की व्याख्या

राज्य की उत्पत्ति का सबसे पुराना सिद्धान्त दैवीय सिद्धान्त ही है। इस सिद्धान्त के अनुसार राज्य की स्थापना स्वयं ईश्वर अथवा किसी अन्य दैवीय शक्ति द्वारा हुई है। इस प्रकार राज्य मानवीय संस्था न होकर एक दैवीय संस्था है। मनुष्य जाति के हित व कल्याण के लिए ईश्वर ने ही राज्य का निर्माण किया है। ईश्वर राज्य में या तो स्वयं शासन करता है अथवा इसके लिए वह कोई प्रतिनिधि नियुक्त करता है जो ईश्वर की ओर से शासन करता है। ऐसा राज्य धर्मतन्त्रात्मक (Theoratic) या ईश्वर शासित राज्य है। ऐसे राज्य में राजा अपने कार्य के लिए केवल ईश्वर के प्रति ही उत्तरदायी है। राजा ईश्वर का प्रतिनिधि है, अतः राजा की आज्ञाओं का पालन आवश्यक है। राजा की अवज्ञा, ईश्वर की अवज्ञा है जोकि न केवल अपराध है वरन् पाप भी है। इस सिद्धान्त की मान्यता है कि ईश्वर ने जिस प्रकार संसार की अन्य वस्तुओं को लोगों के लिए बनाया है, उसी प्रकार राजा भी ईश्वर की ही सृष्टि है।

दैवीय सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ

दैवीय सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ निम्न है :—

विशेषताएँ
1. दैवीय संस्था है
2. ईश्वर के प्रति ही उत्तरदायी है
3. जनता का कर्तव्य
4. राजसत्ता पैतृक
5. राजा का कार्य जनता के हित में

* ① दैवीय संस्था है

राज्य के उत्पति की दैवीय सिद्धान्त की विशेषताएँ मे राज्य मानवीय संस्था न होकर दैवीय संस्था है।

② ~~जनता का~~ ईश्वर के प्रति ही उत्तरदायी है :-

राजा पृथ्वी पर ईश्वर (दैवीय) का प्रतिनिधि है और वह अपने कार्यो के लिए जनता के प्रति नहीं, ईश्वर के प्रति ही उत्तरदायी है।

③ जनता का कर्तव्य

जनता का यह कर्तव्य है कि वह बिना किसी विरोध के राजा की आज्ञाओं का पालन करे। राजा यदि उदार एवं अच्छा है, तो ईश्वर की प्रसन्नता है, यदि वह कठोर या अत्याचारी है, तो इसे ईश्वर का क्रोध समझना चाहिए।

* ④ राजतन्त्र पैतृक

राज्य की उत्पत्ति का दैवीय सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ के अन्तर्गत राजा का पद वंशानुगत अर्थात राजतन्त्र पैतृक होता है जो कि पिता से पुत्र को प्राप्त होता है।

* ⑤ राजा का कार्य जनता के हित में

जिस प्रकार ईश्वर जो कुछ करता है अपनी सृष्टि के हित के लिए ही करता है उसी प्रकार राजा के सभी कार्य जनता के हित में ही है।

* दैवीय सिद्धान्त की आलोचना

यद्यपि प्राचीन और मध्यकाल में दैवीय सिद्धान्त लोकप्रिय रहा. परन्तु 18वीं शताब्दी से ही इसकी आलोचना होने लगी। आज यह सिद्धान्त केवल कहानी मात्र रह गया है:—

- ① अनैतिहासिक सिद्धान्त
- ② अवैज्ञानिक सिद्धान्त
- ③ यह सिद्धान्त राजनीतिक नहीं, धार्मिक है
- ④ राज्य एक मानवीय संस्था है
- ⑤ यह सिद्धान्त रूढ़िवादी है

विरुद्ध निम्नलिखित तर्क दिये गये हैं—

(1) **अनैतिहासिक सिद्धान्त** (Non-historical Theory)—इतिहास से इस सिद्धान्त की पुष्टि नहीं होती है। दूसरे शब्दों में इतिहास में ऐसा कोई प्रमाण नहीं जिससे इस सिद्धान्त का समर्थन किया जा सके।

(2) **अवैज्ञानिक सिद्धान्त** (Un-scientific Theory)—डार्विन ने अपने विकासवादी सिद्धान्त द्वारा यह सिद्ध किया है कि विश्व की कोई भी वस्तु ईश्वर की कृति नहीं है, वरन् सभी ऐतिहासिक विकास का परिणाम है।

(3) **यह सिद्धान्त राजनीतिक नहीं, धार्मिक है** (This Theory is Religious and not Political)—इस सिद्धान्त का प्रतिपादन धर्मशास्त्रियों ने किया है और इस सिद्धान्त का आधार राजनीतिक तथ्य

नहीं वरन् धार्मिक विश्वास हैं। यह सिद्धान्त अन्धविश्वास की नींव पर टिका हुआ है। **जेम्स प्रथम** का यह कथन सर्वथा बेहूदा है कि, ***"राजा लोग पृथ्वी पर ईश्वर की जीवित प्रतिमाएँ हैं।"***

(4) **राज्य एक मानवीय संस्था है** (State is a Human-being Institution)—यह कहना सर्वथा गलत है कि राज्य ईश्वर की सृष्टि है, इसके विपरीत सही यह है कि राज्य एक मानवीय संस्था है।

गिलक्राइस्ट के शब्दों में, ***"यह धारणा कि ईश्वर इस या उस व्यक्ति को राजा बनाता है, सामान्य अनुभव और साधारण ज्ञान के सर्वथा प्रतिकूल है। आज तक कोई भी निरंकुश राजा जो ईश्वर का प्रतिनिधि होने का दावा करता है, ईश्वर-दत्त कोई भी प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सका, जिससे यह सिद्ध हो सके कि वह वास्तव में ईश्वर का प्रतिनिधि है।"***

(5) **यह सिद्धान्त रूढ़िवादी है** (Theory is conservative)—यह सिद्धान्त इसलिए रूढ़िवादी है कि जब राज्य का निर्माण ईश्वर ने किया है तो जनता उसमें कोई परिवर्तन नहीं कर सकेगी। फिर यह सिद्धान्त जनता के अधिकारों की कोई बात ही नहीं करता है।

निष्कर्ष :–

दैवीक उत्पत्ति के सिद्धान्त ने जब मनुष्य भर्द्द सभ्य था, सामाजिक व्यवस्था बनाने में बड़ा सहयोग दिया। अराजकता को समाप्त करने, शासित सम्पति व सरकार के प्रति सम्मान की भावना को दृढ़ करने मे इस सिद्धान्त ने बहुत सहायता की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

राजनीति विज्ञान (प्रथम सेमेस्टर)

— राम प्रसाद एण्ड संस

डॉ. सी.पी. शर्मा